International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 18-01-2019; Accepted: 23-02-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 2; March 2019; Page No. 30-32

महाकवि गुलाब खण्डेलवाल के काव्य–दर्पण में जीवन मूल्य का प्रतिबिम्ब

मोनिका
शोधार्थी–हिन्दी विभाग, राष्ट्रीय संत तुकड़ो जी महाराज, विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश
साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधि होता है। वह अपने युग की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। अतः उसकी कृतियों में युगीन परिस्थितियों की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। काव्य में जीवन के विभिन्न प्रतिमानों की सार्थकता सभी युग में बनी रही है। इस सार्थकता को बनाए रखने के लिए सबसे बड़ा योगदान साहित्यकारों का रहा है। उन साहित्यकारों में एक नाम महाकवि गुलाब खंडेलवाल का है जिन्होंने भक्ति, प्रेम, अध्यात्म के अतिरिक्त मानवीय मूल्यों और मानवता के उत्कर्ष को केंद्र में रखकर अपने साहित्य का सृजन किया। जो वर्तमान समय की समस्याओं हल करने में सक्षम ही नहीं बल्कि नई दिशा प्रदान करने वाला दृष्टिगोचर होता है। खण्डेलवाल सांस्कृतिक नवजागरण व सांस्कृतिक पुनरुत्थान के कवि है, पर वह अतीत की ओर लौटने वाले कवि नहीं, बल्कि अतीत को वर्तमान से जोड़ कर भविष्य की दिशा निर्धारित करने वाले कवि थे। अंतः युगीन अर्थवत्ता में खण्डेलवाल सदा–सदा के लिए प्रासंगिक बने रहेगे।

मूल शब्द : साहित्यकार, कवि गुलाब खण्डेलवाल, जीवन मूल्य।

प्रस्तावना

साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधि होता है। वह अपने युग की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। अतः उसकी कृतियों में युगीन परिस्थितियों की छाप स्पष्ट दिखाई देती है।

साहित्य समाज का दर्पण है। एक साहित्यकार समाज की वास्तविक तस्वीर को सदैव अपने साहित्य में उतारता रहा ह। मानव जीवन समाज का ही एक अंग है। एक अच्छा साहित्य मानव जीवन के उत्थान व चारित्रिक विकास में सदैव सहायक होता है। साहित्य से उसका मस्तिष्क तो मजबूत होता ही है साथ ही साथ वह उन नैतिक गुणों को भी जीवन में उतार सकता है जो उसे महानता की ओर ले जाते हैं। यह साहित्य की ही अद्भुत शक्ति है जिससे समय–समय पर मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

इस प्रकार जीवन और साहित्य का अटूट संबंध है। साहित्यकार अपने जीवन में जो दुःख, अवसाद, कटुता, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, व दया आदि का अनुभव करता है उन्हीं अनुभवों को वह साहित्य में उतारता है।

किसी भी राष्ट्र की महानता केवल एक युग विशेष द्वारा अर्जित उपलब्धियों से नहीं होती वरन् उसके लिए युगों–युगों की जीवंत एवं गतिमान परंपराओं और उदात्त जीवन आदर्शो का योगदान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्र के गरिमामयी व्यक्तित्व के लिए उसकी श्रेष्ठ सांस्कृतिक एवं सामाजिक परंपराओं, इतिहास के गौरवशाली स्वरूप एवं मूल्यों के प्रति मनुष्य की युगों–युगों की आस्था आवश्यक है। काव्य में जीवन के विभिन्न प्रतिमानों की सार्थकता सभी युग में बनी रही है। इस सार्थकता को बनाए रखने के लिए सबसे बड़ा योगदान साहित्यकारों का रहा है। उन साहित्यकारों में एक नाम महाकवि गुलाब खंडेलवाल का है जिन्होंने भक्ति, प्रेम, अध्यात्म के अतिरिक्त मानवीय मूल्यों और मानवता के उत्कर्ष को केंद्र में रखकर अपने साहित्य का सृजन किया। इस क्षेत्र के व्यापक आयाम में उन्होंने देश प्रेम और प्राणी मात्र की कल्याण कामना को वर्ण्य विषय बनाया। कवि अपनी रचनाओं की भावभूमि पर राष्ट्र प्रेम, देश भक्ति, सभ्यता और समाज, समुद्र, प्रकृति, नदियां, पर्वत, सूर्य, आकाश, क्षितिज सबको समेट लेता है।

उनकी रचनात्मक दृष्टि विभिन्न कोणों से रूपायित है इसलिए उनकी काव्ययात्रा जीवन के शाश्वत मूल्यों के शुभ अन्वेषण में संलग्न रही है। उनके संबंध में विश्वनाथ जी ने लिखा है कि ''गुलाब जी सहज, सुंदर, सौम्य और आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी है। स्वभाव से सरल निश्छल, प्रचार तंत्र और साहित्यिक अखाड़ेबाजी से उदासीन, भारतीय जीवन मूल्य के पोषक, साहित्य को जीवन के लिए और जीवन के साहित्य के लिए मानने वाले और उसके अंतराल में छिपे शाश्वत के बल पर पूरी आस्तिकता से परिस्थितियों के आवर्त को झेलते हैं । विषय विधा एवं भाषा की विविधता से पूर्ण गुलाब जी के साहित्य में कौन सी कृति अधिक श्रेष्ठ है कहना कठिन है। उन्होंने काव्य की जिस भी विधा को छुआ है उसी में अपनी भावनानुभूति और कला क्षमता से चमत्कार पैदा कर दिया है। रूचि भेद और अवस्थाभेद, जीवन अनुभव तथा संस्कारों की भिन्नता के कारण इस वाटिका के किन फूलों की सुंगध किसे कितना भा जाएगी इसका निर्णय पाठकों पर छोड़कर इसका प्रत्येक सहृदय को गुलाब जी के साहित्य यज्ञ में भाग लेने को आमंत्रित करते है'' (कालजयी–आमंत्रण, पृष्ठ–7)

महाकवि गुलाब खंडेलवाल ने अपने काव्य में मानव मूल्य तथा नैतिकता को अत्यंत सशक्तता से व्यक्त किया है। वह प्रगतिशील कवि है, इसलिए उन्होंने मानव जीवन को गति, शक्ति और मुक्ति देने का प्रयास किया है। हर कवि परिस्थितियों को परख कर जीवन के यथार्थ एवं मानवीय मूल्यों की ओर ले जाने का प्रयास करता है। वह गुलाब जी ने भी किया। इसी से काव्य में अतीत की पुनर्प्रतिष्ठा, वर्तमान का स्पष्टीकरण और भविष्य की मीमांसा की जाती है।

21वीं सदी के काव्य रचनाकारों में हिंदी कविता को सबसे अलग व नई ऊर्जा से संपृक्त करने वाले महाकवि गुलाब खंडेलवाल ने जो कुछ सृजन किया, वह काव्य जीवन और साहित्य की श्रेष्ठतम् मूल्यों से अनुप्राणित है। अपने रचना संसार में कवि का व्यक्तित्व काव्य के विराट् आयामों के साथ तादात्म्य का अनुभव करके प्रेरणा की समाधि में कुछ ऐसा उठ गया है कि वहां से वाणी की जो भी झंकार उठती है, वह सत्य, शिव और सुंदर का पर्यायवाची बन जाती है। उनकी रचनाओं में अनुभूति की पूरी ऊष्मा, जीवन का पूरा आवेग है। उसमें कवि की सृजन कल्पना कला की पूरी ऊंचाई से रम्यतम् सौंदर्य प्रसाधनों का चयन करके उद्भूत हुई

है। गुलाब जी के काव्य में छायावादी प्रेम गीत है। जैसे–'आयु बनी प्रस्तावना'। राष्ट्र प्रेम की अभिव्यंजना करने वाले गीत मातृभूमि की वंदनाएं एवं उद्‌बोधन है। जैसे– 'मेरे भारत मेरे स्वदेश'। तो कहीं आध्यात्मिक चेतना रहस्य व निश्छल भक्ति से पूरित भावुक गीत भी है। जैसे––'तिलक करे रघुवीर' सब कुछ कृष्णार्पणम' नहीं विराम लिया'। भक्तिकाल भक्ति और आध्यात्मिकता के संपृक्त दर्शन से अवतरित उनके गीत रचनाओं में एक समन्वित रसधारा प्रवाहित करती है जो 'ब्रह्मानंद सहोदर' का सुख देता है और यही अवधारणा रहस्यवादी अनुभूति का पथ प्रशस्त करती है। इसी दृष्टि से भी गुलाब छायावाद और छायावादोत्तर काल के उन वर्ण्य कवियों में परिगणित किए जाते हैं जो सूक्ष्म अभिव्यंजना से अपने गीतों में सुख का नया सागर तैयार कर देते हैं। इन्हीं मूल्यों पर आधारित गुलाब जी द्वारा गठित प्रबंधात्मक रचनाएं ' उषा' महाकाव्य और 'कचदेवयानी, व आलोक वृत्त खंडकाव्य भाषा शैली शिल्प की कसौटी पर भी अपनी एक अलग पहचान रखती है। गुलाब जी की मान्यता है कि ''उषा महाकाव्य में मानव भावनाओं का वैचिन्र्यपूर्ण संघर्ष अत्यंत कलात्मक ढंग से निरूपित हुआ है।'' महाकवि सुमित्रानंदन पंत लिखते है– ''मुक्तपंख कल्पना तथा गहन गंभीर अनुभूतियों का ऐसा अद्‌भुत परिपाक और कहीं कम देखने को मिलता है। कवि ने जगत्, जीवन तथा ईश्वर संबंधी अपने विचार पात्रों को जीवन की विविध परिस्थितियों में उलझाकार मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। आत्मा–परमात्मा सृष्टित्व आदि विषयक जटिल दार्शनिक विचारों में कवितत्व के भाव स्निग्ध स्पर्श के कारण एक अनुभूति युक्त गीतात्मक आ गई है। जीवन का ज्ञानपरुष और गूढ़ सत्य इस काव्य में रसतरल होकर ह्रदय को स्पर्श करने की क्षमता रखता है। गुलाब की सौन्दर्य दृष्टि तथा काव्य भावना आधुनिक है। उन्होंने काव्य की पंक्ति–पंक्ति में इतने अधिक एवं उच्च कोटि के उपादान भर दिए है कि उनसे सहज ही ऐसे चार और महाकाव्यों का प्रणयन हो सकता है। प्रेम का त्रिकोण चिरपरिचित तथा प्राचीन होने पर भी नये ही रूप में अवतरित हुआ है। 'उषा' मानव की भावना, किरण बुद्धि तथा सजीव कर्म प्रतीक है। प्रभात भावुकता की सजीव की मूर्ति है। उसका आत्म बलिदान उषा की तरह प्रेम की अग्नि में तपा तथा बुद्धि की कसौटी पर कसा हुआ नहीं है। वह कोरी भावुकता से प्रेरित है। किशोर भावुकता की पृष्ठभूमि में प्रेम के उदात्त गंभीर रूप का प्रासाद निर्मित करने में कवि को असंदिग्ध सफलता मिली है।'' (गुलाब ग्रंथावली चतुर्थ खंड, पृष्ठ–92)

गुलाब खंडेलवाल ने इस महाकाव्य में कल्पित पात्रों की काल्पनिक कथा के द्वारा आधुनिक युग के जीवन दर्शन को रूपायित किया है और मानवीय भावनाओं की भाव भूमि में आधुनिक समाज में व्याप्त मध्यम वर्ग के परिवार की परिस्थितियों के मध्य विकसित प्रणय संबंधों का यथार्थ चित्र उकेरा है।

कवि की प्रणय कथा के संयोजन के माध्यम से सनातन संघर्षशील समस्याओं के परिवेश में प्रस्तुत करने की दशा पर टिप्पणी करते हुए पंत जी ने लिखा है ''एक साधारण प्रणय कथा को मानव जीवन की सनातन संघर्षशील समस्याओं के परिवेश में अंकित कर गुलाब खंडेलवाल जी उसे एक चिरंतन स्वार्थकता तथा शाश्वत रस मूल्य देने में समर्थ हुए हैं। ह्रदय बुद्धि के ऊहापोह तथा जीवन–मरण, सुख–दुःख, संयोग–वियोग, नियति–पुरुषार्थ आदि गंभीर प्रश्नों पर कथा के भीतर कवि सुलभ भावनात्मक दृष्टि से चिंतन की अमूल्य वैचारिक निधि बिखेर कर कवि की प्रतिभा निश्चय ही उषा महाकाव्य के स्वर्ण शिखर पर आरूढ़ कर सकी है।'' (गुलाब ग्रंथावली चतुर्थ खंड, पृष्ठ–92)

'उषा' महाकाव्य काल्पनिक कथानक के आधार पर अवलंबित है। तथापि रचनाकार ने मानव जीवन मूल्यों के माध्यम से छायावादी काव्य धारा की पृष्ठभूमि में सौंदर्यपूर्ण कल्पना की दृष्टि से सृजित किया है जिस पर जयशंकर प्रसाद की कामायनी की छाया स्पष्ट दिखाई पड़ती है संवादों का सृजन मनु और श्रद्धा के संवादों को स्पष्ट करते हुए किया गया है। यदा–कदा शब्दावलिया कामायनी का स्मरण करवाती हैः–

उषा (प्रथम सर्ग) दो प्राणों का विश्व आह वह कितना मधुर बना था।

मृदु रहस्य–सा जिस पर स्मिति का स्वर्ण वितान तना था।
उषे! उसी में तो मन का सुख मूर्त हुआ अपना था
वह उन्माद, हँसी, वह जीवन, कह दो सब सपना था।

कामायनी (कर्म सर्ग श्रद्धे! होगी चन्द्रशालिनी

यह भव रजनी भीमा,
तुम बन जाओ इस जीवन के
मेरे सुख की सीमा।

गुलाब खण्डेलवाल का अभिमत है– "कच–देवयानी" मेरी 1945 की रचना है। यह मेरे काव्य विकास की एक सीमा रेखा भी है। इसका कथानक महाभारत पर आधारित है। इस काव्य–रचना में मैंने कच और देवयानी के चरित्रों के पारस्परिक विरोध का निरूपण किया है। यह विरोध न केवल संस्कृतिगत और जातिगत है बल्कि स्त्री–पुरुष की प्रवृत्ति और प्रकृतिगत भिन्नता की भी सूचक है। यही पारस्परिक विरोध पुस्तक के दोनों सर्गों में कच और देवयानी की संवेदनाओं और मनःस्थितियों के अलगाव को चित्रित करता है।'' (भूमिका, गुलाब ग्रंथावली, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ–67)

तुम ऐसे विद्यालीन रहे
पुस्तक के आगे बढ़ न सके,
पढ़ लिये शास्त्र, इतिहास सभी
नारी के मन को पढ़ न सके।

यह कृति गुलाब जी की काव्य प्रतिभा को प्रमाणित करने वाली एक ऐसी धरोहर है जिसमें उन्होंने प्रणय सम्बन्ध और अभिव्यक्ति क्षमता का जीता–जागता चित्रण तो किया ही है, उन्होंने युग–काल के परिप्रेक्ष्य में जीवन–मूल्यों तथा सांस्कृतिक दृष्टियों का भी यथोचित विस्तार किया है।

'आलोकवृत्त' यथानाम तथा गुण को चरितार्थ करने वाली ऐसी कृ ति है जिसमें जीवन मूल्यों के आधार सत्य और अहिंसा की अनुगूँज दिग्दिगन्त तक सुनायी पड़ती है। महादेवी वर्मा ने लिखा है – "जिस प्रकार आलोक का आधार किसी दिशा में उदय होकर भी सब दिशाओं को आलोकित कर देता है, उसी प्रकार युग–पुरुष एक देशकाल में उत्पन्न होकर भी सार्वभौम तथा सार्वकालिक हो जाते हैं। युग के क्रान्ति द्वारा बापू भी भारत के क्षितिज पर उदय होकर सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक ज्योति सा स्तंभ रहेंगे। उनका जीवन–वृत्त सबका है, किन्तु सबमें अपनी–अपनी दृष्टि के रंग से रंगमय करके उसे शब्दायिता किया है। 'संभवामि युगे–युगे' में जीवन मूल्यों के जिस नवीकरण का संकेत है वह गाँधी पुत्र में संपूर्णता के साथ साकार हुआ है। भारतीय संस्कृति में सनातन जीवन–मूल्यों के आधार सत्य और अहिंसा ही रहे हैं, जिनके अभाव में मानवीय संबंध अर्थहीन हो जाते हैं। सत्य बुद्धि की चरम उपलब्धि है तथा अहिंसा ह्रदय की ओर ये दोनों अपने प्रयोगात्मक रूप में विविध तथा प्रभविष्णुता में युग–युगान्तर व्यापी रहे हैं। बापू ने इनका समन्वय कर उसे जीवन की सुरभि और मानवता का रक्षा–कवच दोनों बना डाला। ये दोनों प्रवृत्तियाँ विद्युत के धनात्मक तथा ऋणात्मक तारों के समान मिलकर ही आलोक की सृष्टि करती हैं। कृती गुलाब

खण्डेलवाल ने आलोकवृत्त में उसी साकार आलोक की कथा को छंदायित किया है। यह गाँधी–युग का अभिलेख भी है और युगपुरुष गाँधी का स्मृत्यर्चन भी। गाँधीवाद धर्म का संप्रदायवाद न होकर जीवन धर्म है, दर्शन का। मतवाद न होकर मानव–दर्शन है और केवल कर्मयोग न होकर सत्य तथा अहिंसा की ऐसी सक्रियता है, जो व्यक्ति को समष्टि से जोड़ती है।" (महादेवी, पृष्ठ–25)

आलोकवृत्त की ये पंक्तियाँ गाँधी की महानता का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं –

कोटि–कोटि जन नव मंत्रों से प्रेरित जाग चुके थे
प्राणों में छाई युग–युग की जड़ता त्याग चुके थे।
जागा पहला मंत्र अभय का और दूसरा श्रम का
मंत्र तीसरा था चरखे से घर–घर के उद्यम का।।
(आलोक वृत्त, पृष्ठ–38)

वस्तुतः कहा जा सकता है कि खण्डेलवाल जी ने अपनी काव्य को जो विशिष्टता प्रदान की उसका प्रमुख कारण उनकी वह अलौकिक दृष्टि थी, जिससे उन्होंने युग की अर्थवत्ता का पहचाना और कालजयी साहित्य की सृजना की। वह साहित्य वर्तमान समय की समस्याओं हल करने में सक्षम ही नहीं बल्कि नई दिशा प्रदान करने वाला दृष्टिगोचर होता है। खण्डेलवाल सांस्कृतिक नवजागरण व सांस्कृतिक पुनरुत्थान के कवि है, पर वह अतीत की ओर लौटने वाले कवि नहीं, बल्कि अतीत को वर्तमान से जोड़ कर भविष्य की दिशा निर्धारित करने वाले कवि थे। अंतः युगीन अर्थवत्ता में खण्डेलवाल सदा–सदा के लिए प्रासंगिक बने रहेगे।

सन्दर्भ

1. गुलाब ग्रंथावली चतुर्थ खंड, पं. श्री नारायण चतुर्वेदी एवं आचार्य विश्वनाथ सिंह, 2001, कमल प्रकाशन, प्रतापगढ़ (उ. प्र) पृष्ठ 91–92.
2. गुलाब ग्रंथावली चतुर्थ खंड, पं. श्री नारायण चतुर्वेदी एवं आचार्य विश्वनाथ सिंह, 2001, कमल प्रकाशन, प्रतापगढ़ (उ. प्र) पृष्ठ 92.
3. भूमिका, गुलाब ग्रंथावली, चतुर्थ खण्ड, , पं. श्री नारायण चतुर्वेदी एवं आचार्य विश्वनाथ सिंह, 2001, कमल प्रकाशन, प्रतापगढ़ (उ.प्र) पृष्ठ 67.
4. आशीर्वचन, महादेवी वर्मा, आलोक वृत्त, गुलाब ग्रंथावली, चतुर्थ खण्ड, पं. श्री नारायण चतुर्वेदी एवं आचार्य विश्वनाथ सिंह, 2001, कमल प्रकाशन, प्रतापगढ़ (उ.प्र) पृष्ठ 257–58.
5. आलोकवृत्त, गुलाब ग्रंथावली, चतुर्थ खण्ड, , पं. श्री नारायण चतुर्वेदी एवं आचार्य विश्वनाथ सिंह, 2001, कमल प्रकाशन, प्रतापगढ़ (उ.प्र) पृष्ठ 289.